भाकृअनुप-भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल

भारत के सभी क्षेत्रों में गेहूँ की बीजाई एवं अन्य कृषि क्रियाओं के लिए परामर्श

(16-28 फरवरी, 2026)

फसल सीजन 2025-26

सामान्य सुझाव

- ➢ पानी की बचत एवं लागत कम करने के लिए सोच-समझकर खेतों में समय पर सिंचाई करें।
- ➢ इस अवस्था में सही से खरपतवार प्रबंधन करने की आवश्यकता है।
- ➢ सिंचाई करने से पहले मौसम का पूर्वानुमान अवश्य देखें। यदि वर्षा होने की संभावना हो, तो सिंचाई न करें ताकि खेत में जलभराव की स्थिति से बचा जा सके।
- ➢ यदि फसल में पीलापन दिखाई दे, तो बिना जाँच के अधिक मात्रा में नाइट्रोजन (यूरिया) का प्रयोग न करें। साथ ही, बादल या वर्षा की संभावना वाले मौसम में नाइट्रोजनयुक्त उर्वरक देने से बचें।
- ➢ गेहूँ की फसल पर पीला रतुआ तथा भूरा रतुआ के संक्रमण के लिए नियमित निगरानी रखें और निकटतम कृषि संस्थान, राज्य कृषि विश्वविद्यालय या कृषि विज्ञान केंद्र से परामर्श लें।

खरपतवार प्रबंधन

- गेहूँ की देरी से की गई बीजाई में संकरी पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण के लिए क्लोडिनाफॉप 15 डब्ल्यूपी की 160 ग्राम मात्रा प्रति एकड़ या पिनोक्साडेन 5 ईसी की 400 मिलीलीटर मात्रा का प्रति एकड़ की दर से उपयोग करें। चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण के लिए 2,4-डी की 500 मिलीलीटर/एकड़ या मेटसल्फ्यूरॉन 20 डब्ल्यूपी की 8 ग्राम/एकड़ या कार्फेंट्राजोन 40 डीएफ की 20 ग्राम/एकड़ या हैलॉक्सिफेन $ फ्लूरोक्सीपायर 40.11 प्रतिशत की 200 मिलीलीटर मात्रा को प्रति एकड़ की दर से बीजाई के 35 दिन बाद प्रयोग करें।
- गेहूँ के खेत में अगर संकरी एवं चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार हैं, तो पहली सिंचाई से पहले या सिंचाई के 10-15 दिन बाद 120-150 लीटर पानी में सल्फोसल्फ्यूरॉन 75 डब्ल्यूजी 13.5 ग्राम/एकड़ या सल्फोसल्फ्यूरॉन + मेटसल्फ्यूरॉन 80 डब्ल्यूजी 16 ग्राम/एकड़ की दर से उपयोग करें। इसके अतिरिक्त, गेहूँ में अलग-अलग तरह के खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए मेसोसल्फ्यूरॉन + आयोडोसल्फ्यूरॉन 3.6 प्रतिशत डब्ल्यूडीजी/160 ग्राम/एकड़ की दर से उपयोग किया जा सकता है।
- कई शाकनाशी प्रतिरोधी फैलेरिस माइनर (कनकी/गुल्ली डंडा) को नियंत्रित करने के लिए, क्लोडिनाफॉप + मेट्रिब्यूज़िन 12$42 प्रतिशत डब्ल्यूपी का 200 ग्राम रेडी मिक्स कॉम्बिनेशन/एकड़ या बिक्सलोज़ोन + मेट्रिब्यूज़िन 60 प्रतिशत डब्ल्यूजी का 600 ग्राम/एकड़ की दर से 120-150 लीटर पानी में घोलकर पहली सिंचाई के 10-15 दिन बाद छिड़काव करें।

सिंचाई प्रबंधन

- ✓ गेहूँ की फसल में आवश्यकता अनुसार हवा की गति कम होने पर सिंचाई करें ताकि फसल को गिरने से बचाया जा सके।
- ✓ तापमान के बढ़ने पर म्यूरेट ऑफ़ पोटाश का 0.2 प्रतिशत (200 लीटर पानी में 400 ग्राम म्यूरेट ऑफ़ पोटाश) का घोल बनाकर पहला छिड़काव बूट लीफ अवस्था पर तथा दूसरा छिड़काव एंथेसिस के बाद करें।
- ✓ हीट स्ट्रेस को कम करने के लिए पोटैशियम नाइट्रेट का 2.0 प्रतिशत (4 किलोग्राम पोटैशियम नाइट्रेट 200 लीटर पानी में घोलकर) का घोल बनाकर पहला छिड़काव बूट लीफ अवस्था पर तथा दूसरा छिड़काव एंथेसिस के बाद करें।
- ✓ दक्षिणी हरियाणा तथा राजस्थान के उत्तरी भाग में अधिक तापमान वाले दिन दोपहर 2.00 से 2.30 बजे के आसपास लगभग एक घंटे के लिए स्प्रिंकलर सिंचाई की जा सकती है।
- ✓ सभी किसान अपनी फसल पर प्रतिदिन पीला रतुआ/भूरा रतुआ/काला रतुआ के संक्रमण पर नजर रखें। गेहूँ के खेत में रतुआ के संक्रमण होने पर प्रॉपिकोनाज़ोल 25 ईसी का एक छिड़काव करने की सलाह दी जाती है। 200 लीटर पानी में 200 मिलीलीटर प्रॉपिकोनाज़ोल 25 ईसी का घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से मौसम साफ होने या दोपहर के समय छिड़काव करें।

एफिड/माहू/चेपा का प्रबंधन

- गेहूँ में लीफ एफिड (चेपा) पर लगातार नज़र रखें। अगर लीफ एफिड्स की संख्या आर्थिक नुकसान के स्तर (इटीएल प्रतिशत 10-15 एफिड/टिलर) को पार कर जाए, तो क्विनालफॉस 25 प्रतिशत ईसी का उपयोग करें। क्विनालफॉस की 400 मिलीलीटर मात्रा का 200-250 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।

16/2/26

(रतन तिवारी)

निदेशक